इकाई 33 समकालीन कविता : स्वरूप और विकास

Ha —

33.0 उद्देश्य
33.1 प्रस्तावना
33.2 समकालीन कविता : स्वरूप और दृष्टि
  33.2.1 समकालीनता, तात्कालिकता एवं परंपरा
  33.2.2 समकालीन परिवेश एवं सर्जना
  33.2.3 समकालीन कविता एवं आधुनिकता
  33.2.4 समकालीन कविता में यथार्थ से साक्षात्कार
33.3 समकालीन कविता और नयी कविता
33.4 समकालीन कविता का विशाल परिदृश्य (प्रमुख कवि)
33.5 समकालीन कविता की काव्यगत अथवा संवेदनागत प्रवृत्तियाँ
  33.5.1 कविता में जन संघर्ष की यथार्थ छवि
  33.5.2 जन सामान्य के आत्म-विश्वास में आस्था
  33.5.3 आत्म-विस्तार और जीवन विवेक का सौंदर्य
  33.5.4 आधुनिकता के प्रचलित प्रतिमानों को चुनौती
  33.5.5 कविता में राजनीतिक संदर्भों की प्रमुखता
  33.5.6 परिवेश के प्रति गहरी आत्म-सजगता
  33.5.7 अस्वीकृति, विद्रोह और आंदोलनों की अर्थ-ध्वनियाँ
33.6 समकालीन कविता की शिल्पगत प्रवृत्तियाँ
  33.6.1 परंपरागत शिल्प से छुटकारे का प्रयास
  33.6.2 काव्य-भाषा
  33.6.3 बिंब, प्रतीक और मिथक
  33.6.4 नवीन काव्य लय
33.7 मूल्यांकन
33.8 शब्दावली
33.9 कुछ उपयोगी पुस्तकें
33.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

33.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- समकालीन हिंदी कविता के संपूर्ण परिवेश एवं यथार्थ को पहचान सकेंगे,
- प्रयोगवाद और नयी कविता से समकालीन कविता का रिश्ता समझ सकेंगे तथा उनमें समानता-असमानता के तत्वों को पहचान सकेंगे,
- समकालीनता, तात्कालिकता, आधुनिकता तथा परम्परा का अर्थ और संदर्भ ज्ञात कर सकेंगे,
- समकालीन कविता की विभिन्न काव्य-धाराओं के विषय में निश्चित अवधारणाओं का उल्लेख कर सकेंगे,
- समकालीन कविता में आंदोलनों, वादों और प्रवृत्तियों को बारीकी से जान सकेंगे,
- समकालीन कविता की संवेदना और शिल्प की उपलब्धियों और सीमाओं की चर्चा कर सकेंगे, और
- तुलनात्मक दृष्टि से समकालीन कविता की मूल्य-दृष्टि के ग्रहण और मूल्यांकन में समर्थ हो सकेंगे।

33.1 प्रस्तावना

पिछली इकाइयों में आप पढ़ चुके हैं कि स्वाधीनता प्राप्ति के साथ देश में जीवन के हर क्षेत्र में नयी आकांक्षाओं ने जन्म लिया। किन्तु आर्थिक-सांस्कृतिक स्वाधीनता के अभाव में देश की इच्छाओं को सही दिशा न मिल सकी। गांधीजी की हत्या के पश्चात् मूल्यविहीन राजनीति का रास्ता खुला दिखाई देने लगा। मूल्यों के विघटन के कारण धीरे-धीरे जनता की उमंगों पर अवसाद के बादल मँडराने लगे। परिणामस्वरूप आस्थावादी जीवन-दृष्टि के स्थान पर अनास्थावादी मूल्य, जीवन और सर्जन में प्रबलता पाने लगे। हिंदी कविता के क्षेत्र में प्रयोगवाद के बाद जन्मी नयी कविता का संपूर्ण आन्दोलन मोह भंग, अवसाद, खिन्नता, श्रम के पराएपन की पीड़ा, आत्म-निर्वासन, अकेलापन, ऊब, विसंगति, विडम्बना, विद्रूपता, अंधेरा, संत्रास, कुंठा, घुटन अस्तित्व के संकट आदि का भावबोध लेकर आया। लेकिन कविता का यह ताजा

दिखाई देने वाला मुहावरा 1960 के बाद बासी महसूस होने लगा। किसी समय में नई लगने वाली राहें जड़ लीकों का रूप लेती हुई अपना आकर्षण खोने लगीं। उधर राजनीति में भी एक खौलता परिवेश दृष्टिगत हुआ। परिणामस्वरूप कविता को नयी कविता से अलग पहचान बनानी पड़ी। इस साठोत्तरी कविता को नया नाम दिया गया — 'समकालीन कविता''। समकालीन कविता के केन्द्र में मामूली आदमी की पीड़ा और शक्ति, स्थितियों और मनःस्थितियों की टकराहट, परिवेश की पुकार तथा स्थापित व्यवस्था की मूल्यांधता से विद्रोह और बगावत के तत्त्व प्रमुख हो गए। इस कविता में संवेदना, काव्य-भाषा, प्रतीक, मिथक, बिंब आदि के स्तरों पर बुनियादी परिवर्तन घटित हुआ।

33.2 समकालीन कविता : स्वरूप और दृष्टि

समकालीन कविता को नयी कविता के बाद की 'विद्रोही कविता' भी कहा जाता है। काल चेतना के प्रति सजग आलोचक समकालीन कविता को ''साठोत्तरी कविता'' कहना अधिक संगत मानते हैं। ऐसे भी आलोचक हैं जो कथ्य और संवेदना की दृष्टि से समकालीन कविता को ''संपूर्ण यथार्थ'' की कविता कहना अधिक उचित समझते हैं। समकालीन कविता का दावा है कि वह न तो भावना मात्र है न कल्पना का अतार्किक आधार। मूलतः यह कविता विचारों के गहरे तनावों-दबावों से विवश हो कर रची जाती है। जीवन से उपजी स्थितियों का तनाव समकालीन कविता में इतना अधिक बढ़ गया है कि कवि स्वयं से ही लड़ कर लहू-लुहान दिखाई देता है। उसकी कविता खुद से, अपने परिवेश से मुठभेड़ करती कविता है। व्यापक अर्थों में कह सकते हैं कि परिवेश ही इस काव्य सर्जना की मूल प्रेरणा है। यहाँ महामानव और लघु मानव की बहस को समाप्त करता हुआ सामान्य मानव केन्द्र में आ गया है। वस्तुतः हर युग की कविता अपने युग के मनुष्य को परिभाषित करने की कोशिश करती है। इसलिए कविता या सृजनकर्म में निरंतर परिस्थितियों के घात-प्रतिघात से बदलती हुई मनोभूमिका का अध्ययन करना आवश्यक हो जाता है। नयी कविता का युग नेहरू युग की राजनीति का दस्तावेज है तो समकालीन कविता में चीन-पाकिस्तान युद्ध की ध्वनि और गुर्राहट तथा लाल बहादुर शास्त्री, इन्दिरा गांधी और उनके बाद के युग की चेतना का यथार्थ विस्फोट है। रचना अपने युग के यथार्थ की टकराहट से ही राह बनाती है। इस आधार पर कहा जा सकता है कि समकालीन कविता अपने परिवेशगत यथार्थ की ईमानदार अभिव्यक्ति है। इस युग के मनुष्य के भीतर पैठे संघर्ष, द्वंद्व, तनाव, आत्म-मंथन, उत्पीड़न, शोषण से उत्पन्न दर्प, व्यंग्य विद्रूप, टूटते हुए मूल्यों और गलते सपनों की चीख इस कविता की संवेदना के रेशे-रेशे में बिंधी हुई है। एक प्रकार से आज के मामूली आदमी का हाड़ फोड़ कर निकला हुआ दर्द ही रचनात्मकता में ढल कर समकालीन कविता के स्वरूप को निर्मित करता है। किन्तु यह समझना भूल होगी कि समकालीन कविता में पश्चिम के आत्महत्या के दर्शन वाला अस्तित्ववादी काव्य-मुहावरा सक्रिय है। यह कविता निराशा, अनास्था, गलते मूल्यों की कविता अवश्य है पर यह मूल्यों के स्तर पर अनास्थावाद की महत्वप्रतिष्ठा नहीं करती। अपनी दिशा और दृष्टि में यह नयी पीढ़ी के अनास्थावादी मूल्यों के प्रति प्रतिबद्ध कविता है।

33.2.1 समकालीनता, तात्कालिकता एवं परम्परा

समकालीन कविता मात्र **सांप्रतिक कविता** का पर्याय नहीं है। यहाँ समकालीनता का अर्थ है सन् 1960 के बाद की कविता। इस संदर्भ में ''समकालीन'' शब्द को ''समसामयिक'' के पर्याय रूप में ग्रहण नहीं किया जाता। क्योंकि अगर ऐसा अर्थ लिया जाए तो प्रत्येक कविता, अपने समय में समसामयिक होगी। इसी तरह इस शब्द से ''तात्कालिकता'' का अर्थ भी नहीं लिया जाता है। मूलतः यह काल (समय) को अपने से पहले की कविता की तुलना में ज्यादा सतर्कता, प्रखरता और चौकन्नेपन के साथ ग्रहण करती है। इसी सतर्कता के कारण समकालीन कविता अपने समय के प्रमुख अंतर्विरोधों, विरोधाभासों, द्वंद्वों और विसंगतियों की कविता है। कवि को यह मालूम है कि कष्ट और शोषण का वास्तविक रूप क्या है और उनका कारण क्या है ? वह उन्हें जीवनानुभवों से पहचान कर लिखता है। वह ''कल्पित'' और अद्वितीय के लिए संघर्ष न कर साधारण जन के लिए संघर्ष करता है। सामाजिक-राजनीतिक स्तरों पर क्षुब्ध कवि ठोस यथार्थ के अनुभव की कविता लिखता है। फलतः समकालीन कविता ''जो हो रहा है'' उसका सीधा खुलासा है। इसलिए इसे वर्तमान से सीधे साक्षात्कार की कविता भी कहा जाता है क्योंकि इसमें नेहरू युग के बाद के लड़ते-झगड़ते, दुखते-कसकते, तड़पते-बौखलाते, सोचते-झींकते आदमी का परिदृश्य है। इस परिदृश्य को समकालीन कविता के प्रमुख कवि धूमिल मुकम्मल रूप में प्रस्तुत करते हैं। ''संसद से सड़क तक'' नामक उनके काव्य-संकलन की प्रसिद्ध कविता ''मोचीराम'' की पंक्तियाँ हैं —

> मेरे लिए हर आदमी एक जोड़ी जूता है।
> जो मरम्मत के लिए खड़ा है।

उपर्युक्त मनोभूमिका को बड़े ही सजीव बिंब के साथ प्रस्तुत करती हैं। समकालीन जीवनानुभव की त्रासदी यहाँ क्षण या क्षणांश के रूप में न आकर काल प्रवाह के रूप में प्रस्तुत हुई है। इसी विशेषता के कारण समकालीन कविता में सामरस्य या क्लासिक पूर्णता नहीं है। अपने मूल अनुभव में यह आघातों और सूचनाओं के विस्फोटों की कविता है, मृदुल दल वाले कोमल किसलय नहीं, यहाँ विचार की खुरदुरी कठोर चट्टानें हैं। संघर्षों का अंधड़, उपहास, व्यंग्य और राजनीति का नरक हैं। अपने खास तेवर में यह अपनी परिस्थितियों से झगड़ते-जूझते आदमी की कविता है।

वस्तुतः यह नयी कविता की परम्परा के सहज विस्तार और विकास की कविता है। कवि ने इसमें परम्परा की लीकों को छोड़ा है और उसके लोक-स्वर को आगे बढ़ाया है। इसीलिए समकालीन कविता के कवि अज्ञेय का मार्ग छोड़कर, मुक्तिबोध का मार्ग संकल्प के साथ ग्रहण करते दिखाई देते हैं।

33.2.2 समकालीन परिवेश एवं सर्जन

समकालीन परिवेश "सशस्त्र राजनीति" और "सशस्त्र मनोदशा" का वातावरण बनाता है। एक तरह की हिंसा और घृणा मानव वृत्ति में पनप रही है। इस परिवेश के भीतर जन्मा साहित्य छापामार मनोवृत्ति का साहित्य है जिसमें सामाजिक क्रांति का एक दरवाजा नक्सलपंथ की ओर खुलता है। सामाजिक मूल्यों के लिए ये सभी रचनाकार गांधी, नेहरू, इन्दिरा, जयप्रकाश, राममनोहर लोहिया आदि किसी को आदर्श नहीं मानते। चे गुयेवारा, माओ, हो ची मिन्ह, मार्क्स, लेनिन, कोहन वेंदो आदि की विचारधारा ही इस कविता का आदर्श है। इन्हीं के विचारों को ले कर यह सृजन एक क्रांतिकारी मानवमूर्ति गढ़ता है इसमें अब वह गुरिल्ला मनःस्थिति भी बरकरार है जो 1970 के बाद तीव्र हुई है। भारत में इसी अवधि में नक्सलपंथी आंदोलन की क्रांतिकारिता का तूफान आया था। बंगाल, असम, बिहार, आंध्र, केरल और देश के अन्य भागों में किसी न किसी रूप में सशस्त्र कार्रवाई को बढ़ावा मिला। कुल मिलाकर इस परिवेश से व्यवस्था-विद्रोह युग का जन्म हुआ। मार्क्सवादी दलों ने "प्रतिबद्ध कविता" का वातावरण बनाया। सरदार भगत सिंह, चन्द्रशेखर आजाद आदि इस कविता में पुनर्जीवित किए गए। सामंतवाद और पूँजीवाद के विरुद्ध जन आंदोलन उठे और पुराने साम्राज्यवादी ढाँचे को तोड़ने का हर संभव प्रयास किया गया। यह विचार खुलकर सामने आया कि अधिकारी तंत्र और लालफीताशाही को बढ़ावा देने वाली और विभाजनकारी राजनीति को अपनाने वाली व्यवस्था को लोकतंत्र नहीं कहा जा सकता। पश्चिम से तकनीक उधार लेकर जो पश्चिमीकरण हुआ उसने हमारे अर्थतंत्र की कमर तोड़ दी। देश के भीतर भ्रष्टाचार और लूट ने लोकतंत्र में निराशा को जन्म दिया। देश में सफेदपोश उपभोक्तावादी संस्कृति की जड़ें मजबूत हुईं और शहरों ने गाँव के शोषण पर जीना शुरू कर दिया। यह शहरीकरण और पश्चिमीकरण ही आधुनिकीकरण का पर्याय बन गया। इस दिखावटी आधुनिकीकरण को असांस्कृतिकीकरण तथा अवमानवीकरण का नाम दिया गया। इसी परिवेश के भीतर से बहुत से आन्दोलन फूटे जिनमें प्रमुख हैं — समकालीन कविता, अकविता, किसिम-किसिम की कविता, पोस्टर कविता, विचार कविता, युयुत्सावादी कविता, दिगंबरी कविता, विद्रोही कविता, जन कविता आदि।

उपर्युक्त राजनीतिक और व्यवस्थापरक परिवेश के अतिरिक्त महँगाई, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, भाई-भतीजावाद, कुलकवाद, परिवारवाद, प्रांतीयतावाद, व्यक्तिवाद और भोगवाद ने जीवन के अंतर्विरोधों के लिए आग में घी का काम किया। परिणामस्वरूप समकालीन कविता के सभी नए पुराने कवियों में व्यवस्था-विरोध का स्वर प्रबल हो गया। "चुनाव प्रहसन" नामक कविता में नागार्जुन ने स्पष्ट शब्दों में कहा —

हरिजन, गिरिजन, नंगे भूखे हम तो डोलें वन में
खुद तुम रेशम साड़ी डाटे उड़ती फिरो गगन में
महँगाई की सूर्पनखा को ऐसे पाल रही हो
शासन का गोबर जनता के सिर पर डाल रही हो।

यहाँ जनता का दर्द परिवेश की तड़प बनकर कविता बन गया है। "अकविता" के एक कवि सौमित्र मोहन ने "लुकमान अली" नामक लंबी कविता में लिखा है —

"लुकमान अली के लिए स्वतंत्रता उसके कद से केवल तीन इंच बड़ी है।
वह बनियान की जगह तिरंगा पहन कर कलाबाजियाँ खाता है।
वह चाहता है कि पाँचवें आम चुनाव में बौनों का प्रतिनिधित्व करे।

उन्हें टाफियाँ बाँटे।
जाति और भाषा की उन्हें कसमें खिलाए
वह आज, नहीं कल, नहीं तो परसों, नहीं तो किसी दिन
फ्रिज में बैठकर शास्त्रों का पाठ करेगा।

आजादी के बाद की विषमता, विद्रूपता का यथार्थ ही समकालीन कविता की केन्द्रीय संवेदना रहा है।

33.2.3 समकालीन कविता और आधुनिकता

धूमिल, श्रीकांत वर्मा, जगदीश चतुर्वेदी, कैलाश वाजपेयी, केदारनाथ सिंह, रघुवीर सहाय, उदयं प्रकाश, अरुण कमल आदि कवियों का सृजनकार्य साक्षी है कि इस सृजन में आधुनिकता एक थकी हुई दृष्टि का पर्याय बन गई है। जैसी कि पहले चर्चा की जा चुकी है, आज आधुनिकता का सामान्य अर्थ हो गया है — पश्चिम की नकल, तकनीकी गुलामी यानी पश्चिमी पराधीनता का सीधा स्वीकार। इसलिए समकालीन कविता का उद्देश्य इस आधुनिकता की दृष्टि का सीधा विरोध है। इस कविता में सहज और सामान्य आदमी की भारतीय अस्मिता, स्वाभिमान और शक्ति की महत्व-प्रतिष्ठा है। कविता के नायक अब मोची राम हो जाते हैं और "नेतराम" को कोई नहीं पूछता। स्थिति के यथार्थ को कहने-जानने में कवि कल्पना के तिलिस्म से दूर होकर कहता है कि वह जीवन के हर क्षेत्र के नरक का साक्षी है। कविता में वह समय और समाज के इतिहास, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र और राजनीति शास्त्र का हाशिया प्रस्तुत करता है। उसके सामने

एक ओर तो अकेले मनुष्य, अव्यवस्थित समाज और परायेपन की समस्या का भीषण रूप है तो दूसरी ओर साम्राज्यवाद और समाजवाद की टकराहट तीव्र हुई है। अब "जनतंत्र", "स्वतंत्रता" और "समाजवाद" का वैचारिक त्रिकोण कायम हुआ है। राष्ट्रीयता का अर्थ भी आर्थिक, राजनीतिक स्वतंत्रता की ओर झुक गया है। फलतः आधुनिक जीवन-मूल्य और आधुनिकता, वर्तमान-बोध और समसामयिकता एक द्वंद्वात्मक स्थिति के रूप में उपस्थित हुए हैं।

विश्व-पूँजीवादी व्यवस्था में प्रौद्योगिकी (टैक्नॉलॉजी) का वास्तविक लाभ पूँजीपति वर्ग को मिला। श्रमिक तो इस प्रक्रिया में माध्यम भर रहा। दुनिया की इस व्यवस्था के साथ चलाने वाला हर देश आधुनिकीकरण की इस यंत्रणा से ग्रस्त होता गया। इसी आधुनिकता और आधुनिकीकरण के प्रभाव ने मनुष्य में आत्म-परायेपन (self-alienation) और अमानवीयकरण (dehumanization) को जन्म दिया। हिन्दी की समकालीन कविता में धूमिल की कविताएँ इसी परिदृश्य का प्रामाणिक दस्तावेज हैं। श्रीकांत वर्मा "मायादर्पण" और "जलसाघर" जैसे काव्य-संग्रह की कविताओं में इसी स्थिति से जूझते हैं। बीसवीं शताब्दी के मनुष्य का यही "घाव" राजकमल चौधरी की कविताओं में "कंकावती" की शक्ल ले लेता है। धूमिल प्रश्नानुकूल मुद्रा में पूछते हैं —

क्या आजादी सिर्फ तीन थके हुए रंगों का नाम है —
जिन्हें एक पहिया ढोता है
या इसका कोई खास मतलब होता है।

— "बीस साल बाद" — "संसद से सड़क तक"

राजनीतिक स्थितियों की अर्थहीनता इसी संग्रह के 'पटकथा' नामक कविता में व्यक्त होती है —

दरअसल अपने यहाँ प्रजातंत्र
एक ऐसा तमाशा है
जिसकी जान
मदारी की भाषा है
× × × ×
अपने यहाँ संसद
तेल की वह घानी है
जिसमें आधा तेल है
और आधा पानी है

(पटकथा)

अपनी लंबी कविता "पटकथा" में धुमिल ने समकालीन हिन्दुस्तान की विसंगतियों और विडम्बनाओं का "असली चरित्र" प्रस्तुत कर दिया है। कवि ने "संस्कृति", "स्वतंत्रता", "संसद", "आजादी", "आस्था", "शांति", "भाषा", "कानून", "जनतंत्र", "त्याग", "मनुष्यता", "झंडा" आदि शब्दों की अर्थवत्ता को खोजे जाने और इनकी भीतरी नियति का भंडाफोड़ कर दिया है। वे घोषित करते हैं कि "हर ईमान का एक चोर दरवाजा है" और आदमी की हालत यह है कि —

सड़कों में होता हूँ
बहसों में होता हूँ
रह-रह कर चहकता हूँ
लेकिन हर बार वापस घर लौटकर
कमरे के अपने एकांत में
जूते से निकाले गए पाँव सा महकता हूँ।

चूँकि समकालीन कवि का काम है स्थिति का खुलासा। अतः समकालीन कविता में आधुनिकता का अर्थ है – वास्तविकताओं से सीधा साक्षात्कार।

33.2.4 समकालीन कविता में यथार्थ से साक्षात्कार

समकालीन कविता को यथार्थ की द्वंद्वमूलक गतिशीलता का इतिहास कहा जा सकता है। मुक्तिबोध और नागार्जुन, सर्वेश्वर और रघुवीर सहाय, विजयदेव नारायण साही और नरेश मेहता, धूमिल और केदारनाथ सिंह से लेकर उदय प्रकाश और मंगलेश डबराल तक की कविता यात्रा का मुक्त और संभावनापूर्ण चित्र है। यथार्थ को आत्मग्रस्त, कुंठित और रुग्ण मानसिकता से न अपनाकर समकालीन कवियों ने स्वरूप दृष्टि की वस्तुपरकता से अपनाया है। अमूर्त को मूर्त बनाने की कोशिश का नतीजा यह हुआ कि इस यथार्थ पर हम भरोसा कर सकते हैं। मुक्तिबोध ने ठीक कहा था कि यथार्थ के तत्त्व परस्पर संश्लिष्ट या गुंफित होते हैं और पूरा यथार्थ स्थिर नहीं वरन गतिशील होता है। "आज की कविता किसी न किसी प्रकार से अपने परिवेश के साथ द्वंद्व की स्थिति में उपस्थित होती है जिसके फलस्वरूप यह आग्रह दुर्निवार हो उठता है कि कवि-हृदय द्वंद्वों का भी अध्ययन करें। अर्थात वास्तविकता में बौद्धिक दृष्टि द्वारा भी अंतःप्रवेश करें और ऐसी विश्व-दृष्टि का विकास करें जिससे व्यापक जीवन-जगत की व्याख्या हो सके।"

यह अनुभव समकालीन कविता के बारे में एकदम सत्य है। समकालीन कविता की पृष्ठभूमि में गजानन माधव मुक्तिबोध की सामाजिक चिंताएँ और सरोकार तथा नागार्जुन, त्रिलोचन, केदारनाथ अग्रवाल और शमशेर बहादुर सिंह के कविता के प्रगतिशील तत्त्व हैं। ध्यान देने की बात यह है कि समकालीन यथार्थ को समझने-समझाने का ढंग सभी कवियों का अलग-अलग है। समकालीन यथार्थ कुँवरनारायण की कविता में वही नहीं है जो नागार्जुन की कविता में है। कुँवरनारायण में समाज के यथार्थ को रचने का ढंग शांत और आत्मदीप्त है, नागार्जुन में व्यंग्यपरक और उत्तेजक। रघुवीर सहाय यथार्थ से आत्मीय संवाद करते हैं तो केदारनाथ सिंह उसे निरन्तर स्थितियों के केन्द्र में रखकर परखते हैं। शमशेर यथार्थ का कविता में अतिक्रमण करते हैं और त्रिलोचन इतिहासबोध से फैलाकर रचते हैं।

33.3 समकालीन कविता और नयी कविता

विचार करने की बात यह है कि समकालीन कविता "नयी कविता" का ही विस्तार है या उसकी नयी कविता से कोई अलग पहचान है। समकालीन कविता में यथार्थ की कई धाराएँ टकरातीं, कोलाहल करतीं सक्रिय है। इनके अनेक रूप और स्तर हैं। स्वयं नयी कविता एक सी नहीं है उनमें अनेक धाराएँ और प्रवृत्तियाँ हैं। मुक्तिबोध की कविता यथार्थ की जिस गतिशीलता के लिए चिंतित है उसी के लिए रामदरश मिश्र, श्रीराम वर्मा, रमेशचन्द्र शाह, नंद किशोर आचार्य, लीलाधर जगूड़ी तथा अरुण कमल जैसे कवि चिंतित दिखाई देते हैं। स्वयं सर्वेश्वर, रघुवीर सहाय, श्रीकांत वर्मा और विजयदेव नारायण साही की कविता में सामाजिक सरोकारों की गहरी तड़प है। इसलिए यह कविता गतिशीलता को बढ़ा रही है। इसका मुख्य बल जीवन के बहु-स्तरीय बहु-आयामी यथार्थ की पकड़ पर है।

बोध प्रश्न 1

i) समकालीन कविता में सक्रिय बदलाव की प्रमुख स्थितियों पर पाँच पंक्तियों में विचार कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

ii) समकालीन कविता "सम्पूर्ण यथार्थ को व्यक्त करने वाली है।" इस कथन पर तीन पंक्तियों में प्रकाश डालिए।

.....

.....

.....

iii) सही (√) गलत (×) का निशान लगाकर बताइये कि समकालीन कविता किस तरह के मनुष्य को सामने लाती है?

(1) महामानव (2) लघुमानव (3) सामान्य मानव

iv) समकालीन कविता के संवेदनात्मक तत्त्वों पर दो पंक्तियों में विचार कीजिए।

.....

.....

v) समकालीनता से क्या तात्पर्य है? इसे कल्पित अनुभवों की कविता क्यों नहीं कहा जाता है? चार पंक्तियों में लिखिए।

.....

.....

.....

.....

vi) निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर लगभग पाँच पंक्तियों में दीजिए —

क) समकालीन कविता में परिवेश की विसंगतियाँ ही व्यक्त हुई हैं।

.....

.....

.....

.....

.....

ख) समकालीन कविता में आधुनिकता की दृष्टि का अस्वीकार क्यों है ?

.....

.....

.....

.....

.....

ग) समकालीन कविता में यथार्थ की स्थिति पर प्रकाश डालिए।

.....

.....

.....

.....

.....

33.4 समकालीन कविता का विशाल परिदृश्य (प्रमुख कवि)

अज्ञेय के काव्य-मुहावरे के चुक जाने के बाद नयी कविता का युग भी समाप्त हो गया। अज्ञेय ने कविता के लिए एक सौन्दर्यशास्त्र का निर्माण किया था पर वह भी इतिहास की वस्तु बन गया। उनके समानांतर प्रगतिशील यथार्थ की कविताधारा चल रही थी और उसी में से आधुनिकतावादियों के व्यक्तिगत स्वांतत्र्य, अनुभूति की अद्वितीयता, क्षणवाद, नव्य रहस्यवाद, शीत युद्ध के प्रभाव आदि को छोड़कर नयी राह बनाई गई। प्रगतिशील विचारधारा को केन्द्र में रखकर महत्वपूर्ण कविता रची गयी।

एक प्रकार से समकालीन कविता निराला-मुक्तिबोध की दिशा-दृष्टि का नया विस्तार है, जिसमें प्रतिगामी शक्तियों से निरंतर जूझने की चाह है। समकालीन कविता में कई धाराएँ सक्रिय हैं। इनमें प्रमुख हैं —

1) **प्रगतिशील यथार्थ की धारा :** इसमें मुक्तिबोध, त्रिलोचन, नागार्जुन, केदारनाथ अग्रवाल, शमशेर, सर्वेश्वर, रघुवीर सहाय, धूमिल, श्रीकांत वर्मा, कुमार विमल, रमेशचन्द्र शाह, मंगलेश डबराल, प्रयाग शुक्ल, गिरधर गोपाल, लीलाधर जगूड़ी, अरुण कमल आदि कवियों का विशाल कवि मंच है।

2) **प्रयाग के "परिमल" विचार मंच से जुड़े कवि :** लक्ष्मीकांत वर्मा, जगदीश गुप्त, विजय देव नारायण साही, धर्मवीर भारती आदि का सृजन भी समकालीन कविता की एक महत्वपूर्ण धारा का अंग है।

3) **तार सप्तक के कवियों** में गिरिजाकुमार माथुर, नरेश मेहता, भवानी प्रसाद मिश्र, शकुंत माथुर, हरि नारायण व्यास आदि ने भी समकालीन जीवन के यथार्थ को खास ढंग से परिभाषित किया है।

4) **स्वाधीनता आंदोलन से जुड़े कवियों** में माखनलाल चतुर्वेदी, बालकृष्ण शर्मा नवीन आदि की राष्ट्रीय-सांस्कृतिक काव्यधारा भी इस काल में सक्रिय रही है।

5) **नवगीत आंदोलन** भी समकालीन कविता की एक धारा है जिसमें ठाकुर प्रसाद सिंह, रमानाथ अवस्थी, रमेश रंजक, चंद्रदेव सिंह, श्रीकांत जोशी, राजेन्द्र किशोर, हरीश मदानी, परमानन्द श्रीवास्तव, विजय किशोर मानव आदि का नाम उल्लेखनीय है।

6) **अकविता आंदोलन** का समकालीन कविता आंदोलन में एक महत्वपूर्ण हाशिया है। इसमें जगदीश चतुर्वेदी, चंद्रकांत देवताले, श्याम परमार, सौमित्र मोहन, गंगा प्रसाद विमल, राजकमल चौधरी आदि के सृजन का विशेष स्थान है।

7) **विचार कविता** आंदोलन की धारा के कवियों में नरेन्द्र मोहन, हरदयाल, विनय, सुखवीर सिंह, कृष्णदत्त पालीवाल, रमेश दिविक, प्रताप सहगल, कुसुम कुमार आदि का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

8) **समकालीन विद्रोही कविता** की एक अन्य धारा है जिसमें उदय प्रकाश, गोरख पांडेय, विनोद शुक्ल, विनोद भारद्वाज, राजेन्द्र उपाध्याय, मलयज, डा. देवराज, ऋतुराज, दुष्यंत कुमार, कुमार विमल, वीरेन्द्र कुमार जैन, विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, नंद किशोर आचार्य, श्रीराम वर्मा, कमलेश, वेणु गोपाल, बलदेव वंशी, मणि मधुकर, कन्हैया लाल नंदन, इंदु जैन आदि अनेक नवीन संभावनाओं के कवि हैं।

महत्वपूर्ण बात यह है कि इन सभी कवियों ने बौद्धिक चिंता का सृजनशीलता से सीधा रिश्ता कायम किया है। इन सभी की काव्य संवेदना में न केवल राजनीतिक भ्रष्टाचार पर तेज टिप्पणियाँ, व्यंग्य-वक्रोक्तियाँ हैं वरन मानवीय सार्थकता के प्रमुख सरोकार भी सक्रिय हैं। समय और समाज के जटिल यथार्थ को समझने के लिए इन सभी काव्यधाराओं, आंदोलनों और प्रवृत्तियों के कवियों ने अपनी गहन संवेदना शक्ति का सार्थक उपयोग किया है। क्रूर विसंगतियों और हादसों के बयानों में समय का सच पूरी ईमानदारी के साथ मौजूद है। नए बिंबों, प्रतीकों, मिथकों और सपाटबयानी के कथनों ने भाषा की सर्जनशीलता में लोकभाषा की चौकसी का सहज रूप प्रस्तुत किया है। आगे हम समकालीन कविता की मूल प्रवृत्तियों की चर्चा करेंगे ताकि आप इस कविता के स्वरूप को समझ सकें।

33.5 समकालीन कविता की काव्यगत अथवा संवेदनागत प्रवृत्तियाँ

33.5.1 कविता में जन संघर्ष की यथार्थ छवि

समकालीन कविता का कथ्य जन संघर्ष की चेतना को अनेक स्तरों पर सृजित करता है। प्रगतिवादी कवियों की व्यवस्था विरोध की प्रवृत्ति इस काल में विद्रोह का रूप धारण कर लेती है। देश में फैला "काला-काला परिवेश", "काला-काली महँगाई" तथा "काले-काले अध्यादेश" नागार्जुन को क्षुब्ध करते हैं। उनके कथ्य में व्यवस्था से संघर्ष का ऐतिहासिक विवेक फूट पड़ता है। केदारनाथ अग्रवाल ने मानव के प्रति प्रकृत राग को नया अर्थ दिया है — उन्हें "आँख मूँद" पेट पर सिर टेके बैठा आदमी तकलीफ देता है। उनकी काव्यानुभूति में यथार्थ का नया संसार जन्म लेता है। प्रगतिशील यथार्थ की धारा के सभी कवियों की काव्य-संवेदना एक-दूसरे के काफी निकट है और समय तथा समाज के जटिल यथार्थ को कविता में सामने लाती है। शब्द युद्ध में बदल जाते हैं और कवि कहता है —

साधो, आज मेरे सत की परीक्षा है
आज मेरे सत की परीक्षा है।
बीच में आग जल रही है
उस पर बहुत बड़ा कड़ाह रखा है
कड़ाह में तेल उबल रहा है
उस तेल में मुझे सब के सामने
हाथ डालना है
साधो, आज मेरे सत की परीक्षा है।

("सत की परीक्षा" — विजय देव नारायण साही)

इस कविता में राजनीतिक-सामाजिक परिवेश और विसंगतियों के खौलते यथार्थ की अभिव्यक्ति है। ऐसी ही अभिव्यक्ति धूमिल की निम्नलिखित पंक्तियों में है —

मैं रोज देखता हूँ कि व्यवस्था की मशीन का
एक पुर्जा गरम होकर
अलग छिटक गया है और
ठंडा होते ही
फिर कुर्सी से चिपक गया है
उसमें न दया है
न हया है
नहीं —
अपना कोई हमदर्द
यहाँ नहीं है। मैंने एक एक को
परख लिया है
मैंने हरेक को आवाज दी है
हरएक का दरवाजा खट-खटाया है
मगर बेकार .....।

यह पूरा यथार्थ इस पीड़ा की अभिव्यक्ति है कि कथनी-करनी से दूर जा पड़ी है। लोकतंत्र या समाजवाद या ऐसी ही अन्य मानवीय मूल्यों और समानता पर आधारित व्यवस्थाएँ मात्र नारा बनकर रह गई हैं जो भ्रष्टाचार और शोषण तंत्र में ढाल का काम कर रही हैं। इस दृष्टि से समकालीन कविता का दर्शन यथार्थ की सच्चाई में आग का दर्शन है। समकालीन कविता ने स्वच्छंदतावादी-छायावादी काव्य-रुझानों को समूल नष्ट करने की ओर कदम उठाया है। कुँवर नारायण, केदारनाथ सिंह, धूमिल, नेहरू युग के अंत के काव्य-मुहावरे को काव्य में परिभाषित करते हैं। इन्हीं के कदमों पर आगे बढ़ती हुई पूरी युवा पीढ़ी की कविता में गुस्सा, खीज और युयुत्सा भर गई है। कवि अराजकता और पूँजीवादी लूट-तंत्र के खिलाफ संघर्ष कर रहे हैं।

इसी दौर में आधुनिकतावादियों और अकवितावादियों ने यौन-क्रांति की कविता भी लिखी थी जो "चालू मुहावरे" के रूप में ही रही। उसका स्वागत नहीं किया गया। अकवितावादियों की निराशा, हताशा और यौन कुंठाओं को उजागर करने वाली यह कविता इतीहास के पन्नों में ही खो गई। आरंभ में धूमिल, राजकमल चौधरी, श्याम परमार आदि ने अकवितावादियों का साथ दिया था किन्तु जल्दी ही उन्होंने दूसरी राह पकड़ ली। अकेले जगदीश चतुर्वेदी "इतिहासहंता" काव्य-संकलन में अकविता आंदोलन का ध्वज थामे रहे।

प्रगतिशील जन-दृष्टि के अभाव में अकविता की काव्य-ऊर्जा समाप्त होती चली गई।

33.5.2 जन-सामान्य के आत्म-विश्वास में आस्था

विरोध, विद्रोह और विद्रूपता को प्रमुख स्थान देने वाली समकालीन कविता अनास्थावादी दिखाई देने के बावजूद जन-सामान्य के अखंड विश्वास का रूप है। इसके कवि मानसिक तथा भावनात्मक यथार्थ को वस्तुगत यथार्थ के रूप में देखने का संकल्प करते हैं। व्यक्ति केन्द्रित असहाय आत्म-मुग्धता को इस काव्य में कहीं भी स्थान नहीं है। इसी तरह नयी कविता में स्वीकृत निराशावाद, अस्तित्ववाद, कुंठावाद अथवा यौनवाद आदि को इधर के कवियों ने विधारधारा के स्तर पर ग्रहण नहीं किया है। भारतीय मध्यवर्ग की खिन्नता और अवसाद का चित्रण ये कवि डटकर करते हैं किन्तु खिन्नता और निराशा को स्थायी भाव के रूप में प्रतिष्ठित नहीं करते। जनशक्ति की आग से अँधेरा भागता है और इससे पूँजीवाद का अजगर भी थरथराता है। गाथा प्रसंगों, नाटकीय दृश्यालेखों, वक्तव्यों, एकालापों, प्रश्नाकुल संवादों में यह काव्यात्मकता निर्भय होकर प्रवेश करती है। कुमार विकल की निम्नलिखित पंक्तियाँ इस काल के मनोभाव का प्रतिनिधित्व करती हैं —

जनता एक बहुमुखी तेज हथियार है
जो अकेली गहराइयों को आपस में जोड़ता है

(मिथक/एक छोटी सी लड़ाई)

कुमार विमल की "एक छोटी सी लड़ाई", विनोद कुमार शुक्ल की "बाजार की सड़क", चंद्रकांत देवताले की "रोशनी के मैदान की तरफ", लीलाधर जगूड़ी की "बची हुई पृथ्वी", ज्ञानेन्द्र पति की "आँख बनते हुए", मंगलेश डबराल की "पहाड़ पर लालटेन", विश्वनाथ प्रसाद तिवारी की "बेहतर दुनिया के लिए", अरुण कमल की "उर्वर प्रदेश" जैसी कविताओं में जन-जीवन के आत्म-विश्वास को व्यक्त किया गया है। व्यापक अर्थ में कहा जा सकता है कि समकालीन कविता में जीवनधर्मी लगाव है। वह प्रेम, करुणा, उत्साह, कर्म, सौन्दर्य, साहस, प्रकृति से लगाव, इतिहास बोध, वर्ग चेतना, प्रतिबद्धता, जनपक्ष धरता के साथ विश्वास दृष्टि की कविता है। जीवनधारा का रूप इसका बीजभाव बन कर आया है —

मैं जब लौटा तो देखा
पोटली में बँधे हुए बूटों ने
फेंके हैं अंकुर।

("उर्वर प्रदेश" — अरुण कमल)

33.5.3 आत्म-विस्तार और जीवन विवेक का सौन्दर्य

नया कवि जीवन-यात्रा में कर्म-सौन्दर्य या संघर्ष के सौन्दर्य को महत्त्व देता रहा है। समकालीन कविता ने भी इस कर्म-सौन्दर्य को खुलेमन से स्वीकार किया है। इसीलिए वह बासी, जड़ सौन्दर्याभिरुचियों पर प्रहार करते हुए ताजी दृष्टि विकसित करता है। इस सौन्दर्यानुभूति में जीवन की अर्थभूमि का छायावादी संकोच भी नहीं है। वस्तुतः यह समय से सच्चे साक्षात्कार और आत्म-विस्तार की रचना यात्रा है। और गहराई में जाकर कहें तो यह कविता-यात्रा निराला की काव्य-परम्परा का प्रकृत सौन्दर्य लिए हुए है। उगता हुआ सूर्य, गीत गाते बच्चे, किरणदल, भूसी की आग, तूस की आग आदि इन कविताओं में अक्सर मौजूद होते हैं। यहाँ कवि प्रार्थना की मुद्रा में आने पर भी यही कहता है कि उसे शक्ति का सौन्दर्य चाहिए। इस संदर्भ में विजयदेव नारायण साही के "साखी" नामक काव्य-संकलन से एक कविता द्रष्टव्य है —

परम गुरु,
दो तो ऐसी विनम्रता दो
कि अंतहीन सहानुभूति की वाणी बोल सकूँ
और यह अंतहीन सहानुभूति
पाखंड न लगे।
दो तो ऐसा कलेजा दो
कि अपमान महत्वाकांक्षा और भूख
की गाँठों में मरोड़े हुए
उन लोगों का माथा सहला सकूँ
और इसका डर न लगे
फिर कोई हाथ ही काट जाएगा।

(प्रार्थना : गुरु कबीर दास के लिए)

दिलचस्प बात यह है कि समकालीन कविता के पुराने नए दोनों तरह के कवियों के मन में कबीर के प्रति असीम आस्था का भाव है। यह भी कहा जा सकता है कि इन कवियों के प्रेरणा गुरू ही कबीर दास बने हैं। कबीर से प्रेरणा लेने का अर्थ है सामाजिक विकृतियों — ढोंगों को ललकार कर तोड़ने का साहस।

33.5.4 आधुनिकता के प्रचलित प्रतिमानों को चुनौती

इस कविता की एक विशेष प्रवृत्ति है — आधुनिकता के प्रचलित प्रतिमानों को चुनौती के स्तर पर तोड़ने का साहस। यहाँ कवि न तो पश्चिमी अर्थ में "आधुनिक" होना चाहता है न "यांत्रिक मानव" और न ही "खोखला दर का आदमी।" न ही वह "मरियल पीला बुद्धिजीवी" बनना चाहता है। आधुनिकता के पश्चिमी अस्तित्ववादी मुहावरे से भी वह नफरत करता है। इसलिए समकालीन कविता का रचना-कर्म अपनी जमीन की जड़ों से जुड़ना चाहता है और उसी के भीतर उग कर अपनी गंध फैलाने का आकांक्षी है। मूलतः उसे लोक चिंता और जनमानस की संवेदना से लगावभरी आधुनिक दृष्टि पसंद है। नागार्जुन अकेलेपन और अनास्था के आधुनिकतावादी दर्शन को तोड़-फोड़ कर चलना चाहते हैं और सशक्त संघर्षपूर्ण मुद्रा में कहते हैं —

मैं न अकेला कोटि-कोट हैं मुझ जैसे तो
सब को तो अपना-अपना दुख है वैसे तो
पर दुनिया को नरक नहीं रहने देंगे हम।

(पुरानी जूतियों का कोरस)

33.5.5 कविता में राजनीतिक संदर्भों की प्रमुखता

राजनीति इधर की कविता का प्रधान संदर्भ इसलिए है कि सारी जीवन-व्यवस्था, सामाजिक-सांस्कृतिक ढाँचा, आर्थिक नीतियों के नियामक तत्त्व इसी में से निकलते हैं। आज राजनीति ने जो अमानवीय स्वार्थांधता विकसित की है वह सच्चे सहज मनुष्य के श्रम को निगल रही है। समकालीन कवि इस स्थिति पर कबीराई अंदाज में व्यंग्य करते हैं। नागार्जुन, सर्वेश्वर, धूमिल, मलयज, लीलाधर जगूड़ी, श्रीकांत वर्मा, उदयप्रकाश आदि की कविताओं में राजनीति के इसी नरक से जन सामान्य को उभारने-बचाने की इच्छा व्यक्त होती है। लीलाधर जगूड़ी की "इस व्यवस्था में" नामक कविता से कुछ पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं —

नौकरी के लिए पढ़कर
सिफारिश से कुर्सी पर चढ़कर
इस दरमियान
मैंने जाना है
जनतंत्र में
बिल्कुल नया जमाना
नागरिकता पर
सबसे बड़ा रंदा थाना है

× × ×

कुटुमदारी निबाहते हुए
चारों ओर जो शोर है
इसका जो भी मतलब हो
इस व्यवस्था में
हर आदमी कहीं न कहीं चोर है

× × ×

जहाँ एक चढ़ाता है
दूसरा उतारता है
नोट और वोट का तख्ता
पेट से टाँग अड़ाता है
पराजय और निराशा के बीच
आदर्श एक चालाकी है
लूटने के अनुशासन में। पुलिस की तरह
सबकी वर्दी खाकी है।

धूमिल भी इसी परम्परा की शक्तिशाली कविता लिखते हैं—

ओ देश के पोर-पोर में दुखते हुए गूँगे जुगनू
क्रोध की अकेली मुद्रा में
उफनते हुए सात्विक खून
आ, बाहर आ ...।"

भाषा की रात — संसद से सड़क तक

आखिरकार वे यहाँ तक कहते हैं कि "लोहे का स्वाद लुहार से नहीं, उस घोड़े से पूछो जिसके मुँह में लगाम है।"

राजनीति ने आजादी के बाद जनता के सुख-स्वप्नों में आग लगा कर जो आतिशबाजी खेली है, पूरी समकालीन कविता उस दर्द का सार्थक बयान है। यह एक ऐतिहासिक हलफनामा है और समय की डायरी पर लिखी गई एक सच्ची इबारत भी। इस कविता को राजनीतिक चेतना की कविता भी कहा जा सकता है क्योंकि राजनीति ने जिस-जिस स्तर पर जो ढोंग और पाखंड विकसित किए हैं उनसे जन्मी पीड़ा का यह बेबाक बयान बेझिझक भाषा में लिखा साक्ष्य तो है ही उनके विरुद्ध जन-रुचि जगाने का हथियार भी है।

33.5.6 परिवेश के प्रति गहरी आत्म-सजगता

समकालीन कविता के रचनाकर्म में परिवेश के प्रति गहरे लगाव का भाव निरंतर बढ़ा है। जटिल अराजकता में जीवन की छटपटाहट को पकड़ने की कोशिश कवि फिकरेबाजी के झटके से न कर अंतःसंघर्ष की मुद्रा में करता है। यह कविता परिवेश के प्रति "अहसास" और उसकी "समझ" दोनों है। अपनी संवेदनात्मक ऐंद्रियता में कवियों ने विचारों और उनके टकरावों को उनके मूल से पकड़ने का प्रयास किया है। धूमिल, रघुवीर सहाय, श्रीकांत वर्मा, सर्वेश्वर आदि कवियों को भारतीय समाज में मूल्यों के विघटन के कारण मनुष्य के चारों और भीषणता से बढ़ते अंधकार के घिराव का अहसास है। इसलिए कविता भावात्मक स्तर पर नहीं बौद्धिक स्तर पर संयोजित होती है।

काव्यात्मक स्तर पर कविताओं की नाटकीय संरचना में परिवेश की पूरी हिस्सेदारी है। परिवेश का आतंक, भय, विद्रूपता, आत्मनिर्वासन को कवियों ने नए-नए अंदाज में उजागर किया है। कविता के कथ्य में परिवेश का रंग गाढ़ा है। अकेले धूमिल का ही उदाहरण लें तो "पटकथा", "मोचीराम", "राजकमल चौधरी के प्रसंग में", "अकालदर्शन", "गाँव", "प्रौढ़ शिक्षा" जैसी कविताएँ परिवेश का इतिहास-भूगोल पूरी प्रामाणिकता से प्रस्तुत करती है। "अकाल में सारस" में केदारनाथ सिंह या "खूँटियों पर टंगे लोग" में सर्वेश्वर परिवेश को ही कविता बनाते दृष्टिगत होते हैं। परिवेश के साथ तदाकार होने की स्थितियाँ समकालीन कवियों में नयी कविता से कहीं ज्यादा है। परिवेश से तदाकार होने के कारण ही यह कविता समकालीन मानव चरित्रों की दुनिया को ठोस रूप-रंगों में, चारित्रिक मुहावरों में व्यक्त कर सकी है। परिवेश की यह सही समझ ही उसकी प्रासंगिकता का ठोस आधार भी बनी है। धूमिल का "मोचीराम" इस सच्चाई को कहता है —

> जो असलियत और अनुभव के बीच
> खून के किसी कमजात मौके पर कायर है
> वह बड़ी आसानी से कह सकता है
> यार तू मोची नहीं शायर है।

यह प्रश्न उठ सकता है कि दूसरे प्रजातंत्र की तलाश में व्यस्त युवा कवियों से क्या उम्मीद करनी चाहिए। उत्तर होगा कि अपनी त्रासद भूमिका में ज्यादातर कविताएँ जन सामान्य की हालत का साक्षात्कार हैं, भले ही उनमें बड़बोला विद्रोह, आत्मस्फीति या सामान्यीकरणों के चालू मुहावरे हों। समकालीनता पर वक्तव्य देते हुए कविताएँ लंबी हो जाती हैं, पर यह कवि की लाचारी है। समकालीन दृश्यालेख इतनी सूचनाओं से भरा है कि कवि हैरानी में है। इसलिए कवि परिवेश को रचता-रचता एक पैगंबराना स्वर अपना लेता है। कविता का चरित नायक समय की व्यथा-कथा को सुनाता है क्योंकि व्यथा की मार उसे तोड़ रही है।

33.5.7 अस्वीकृति, विद्रोह और आंदोलनों की अर्थध्वनियाँ

समकालीन कविताओं में पूर्व परम्पराओं के लिए अस्वीकृति की मुद्रा है। सभी युवा कवि "विद्रोही कंठ के पुकार" की कविता लिखते हैं। लेकिन उसके भीतर अपनी पहचान के लिए कवियों ने "अकविता", "न कविता", "सही कविता" "विचार कविता", "युयुत्सावादी कविता", "श्मशानी कविता", "जन कविता", "आक्रोशी कविता" आदि कई आंदोलन चलाए हैं। ये आंदोलन बहुत थोड़े-थोड़े समय के लिए ही चल सके हैं क्योंकि कविता के क्षेत्र में हर नए से नया लिखने वाला अपने आपको दूसरे कवियों से एकदम अलग दिखाने की कोशिश में रहता है। यह सिद्धांत भी पेश करता है कि पिछली पीढ़ी के काव्य से उसके काव्य के तत्त्व और रूप अलग हैं। वैचारिक, कलात्मक, मूल्यगत दृष्टिकोण का संवाद सेतु वह पुरानी काव्य पीढ़ी से जोड़ना नहीं चाहता। पर शोर मचाने पर भी वह अलग कहाँ है? कहीं न कहीं उसमें मुक्तिबोध, सर्वेश्वर, श्रीकांत वर्मा, गिरिजाकुमार माथुर, नरेश मेहता, भवानी भाई, रघुवीर सहाय, कुँवर नारायण या विजयदेव नारायण साही आदि की गहरी धमक सुनाई देती है। उदय प्रकाश, मंगलेश डबराल, ऋतुराज आदि कवियों में प्रगतिशील कवियों की परंपरा की ललकार और स्वीकार का भाव है। इतिहास की प्रक्रिया से उत्पन्न विडम्बना का स्वर और राजनीतिक पतन पर अफसोस जो शमशेर, साही और सर्वेश्वर में है वही स्वर इन युवा कवियों में मिलता है। मुक्तिबोध की भाँति आदमी के टूटने की गहरी ट्रेजडी का भाव उदय प्रकाश के "सुनो कारीगर" और "अबूतर-कबूतर" जैसे काव्य-संग्रहों में साफ दिखाई दे जाता है। नए काव्य-आंदोलनों से जाहिर है कि समकालीन कविता में मामूली आदमी का गहरा आत्म-विश्वास गैर-रोमांटिक ढंग से व्यक्त हुआ है। मूलतः यह परिवेश और मामूली आदमी के प्रति गहरे लगाव की कविता है।

बोध प्रश्न 2

1 समकालीन कविता के विशाल परिदृश्य पर दस पंक्तियों में प्रकाश डालिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2 समकालीन कविता की चार प्रमुख प्रवृत्तियों पर आठ-पंक्तियों में विचार कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

3 समकालीन कविता में तीव्र विद्रोह या आग का दर्शन है? चार पंक्तियों में विचार कीजिए।

.....

.....

.....

.....

4 समकालीन कविता में आस्था के स्वर के उदाहरण तीन कविताओं के शीर्षक बताकर दीजिए।

.....

.....

.....

5 "समकालीन कविता की सौन्दर्यानुभूति में छायावादी अर्थ भूमि का संकोच नहीं है जीवन का मुक्त विस्तार है।" इस कथन को ध्यान में रखकर उत्तर दीजिए (पाँच पंक्तियों में)।

.....

.....

.....

.....

.....

6 समकालीन कविता में राजनीतिक सन्दर्भों की प्रमुखता है। चार पंक्तियों में विचार कीजिए।

.....

.....

.....

.....

7 सही √ गलत × का निशान लगाकर उत्तर दीजिए — समकालीन कविता में

क) परिवेश के प्रति उदासीनता ( )

ख) परिवेश के प्रति आत्म-सजगता ( )

ग) परिवेश के प्रति तटस्थता ( )

8 समकालीन कविता के भीतर अपनी पहचान बनाने वाले किन्हीं चार आंदोलनों के नाम लिखिए।

.....

.....

.....

.....

33.6 समकालीन कविता की शिल्पगत प्रवृत्तियाँ

33.6.1 परंपरागत शिल्प से छुटकारे का प्रयास

शिल्प की दृष्टि से समकालीन कविता का एक मूल्यवान पक्ष यह है कि यह अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता तथा चमत्कार रहित सहजता का समर्थन करती है। समकालीन कवि कविता को प्रासंगिक बनाने के लिए उसे तथाकथित काव्यत्व से छुटकारा दिलाने की कोशिश करता है। कभी पारंपरिक नियमों और अनुशासनों को चुनौती देकर तोड़ता है तो कभी भाषा, बिंब, प्रतीक लय आदि के स्तर पर चतुर वाक्य संयोजन करता है। परम्परागत काव्य रूप — मुक्तक प्रबंध आदि को वह स्वीकार नहीं करता। क्योंकि वह मानता है कि हर समर्थ कवि अपने लिए एक अलग टेकनीक विकसित करता है। जीवन में मूल्यगत विक्षेप का जो भाव आया उसने इस कविता के रूप-विधान पर भीतर-बाहर से असर डाला। अनियमित जीवन को इन कवियों ने अनियमित गद्य की लय में ढाल कर कविता रची। गहन "काव्यात्मकता" और "कलात्मकता" का स्थान गद्यात्मकता और विद्रोही सपाटबयानी ने ले लिया। कवि ने प्रगीत के मूड को छोड़कर तल्ख व्यंग्योक्ति और विद्रूप से पूर्ण नाटकीय कविता की सीधे काव्य यात्रा की। इस दृष्टि से अधिकांश कवि मुक्तिबोध की काव्य दिशा की और उन्मुख हुए। कुछ में तो फंतासी (Fantasy) की ओर झुकाव भी दिखाई देता है। अनुभव और विचारों की सघनता लंबी कविताओं के दौर को सामने लाती है। धूमिल की "पटकथा" और मोचीराम, राजकमल चौधरी की "मुक्ति प्रसंग" भवानी प्रसाद मिश्र की "शब्दों के तल्प पर" सर्वेश्वर की "कुआनो नदी" आदि इस दौर की महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ हैं।

इन लम्बी प्रबन्धात्मक कविताओं के अलावा इस युग में प्रबन्ध काव्य रचनाएँ भी हुईं जिनमें भवानी प्रसाद मिश्र का "कालजयी", जगदीश गुप्त का "गोपिका", नरेश मेहता का "महाप्रस्थान", जगदीश चतुर्वेदी का "सूर्यपुत्र", विनय का "एक पुरुष और" आदि उल्लेखनीय हैं।

इस दौरान लिखे गए नवगीतों में पुराने गीतों से संवेदना और शिल्प के स्तर पर बदलाव दृष्टिगत होता है। नवगीतों में लोक संवेदना को लोकभाषा की तद्भवता में उसकी मूल ध्वनि और राग चेतना के साथ ग्रहण किया गया है। गीत में टेक और तर्ज की तरन्नुम का जो आग्रह था उसे नवगीत ने स्वीकार नहीं किया। नवगीत भाव लय के प्राण रागों का गायन है। इसलिए उसकी प्रकृत भाव चेतना पाठक के प्राणों को छूती है। ठाकुर प्रसाद सिंह, शंभूनाथ सिंह, चंद्रदेव आदि के नवगीतों को इस दृष्टि से देखा जा सकता है।

33.6.2 काव्य-भाषा

समकालीन कविता में यथार्थ का दबाव और यथार्थ से साक्षात्कार भाषा के साथ कविता के नए तरह के संबंध का सूचक है। यह भाषा और समाज के उस रिश्ते की परिचायक है जिसमें भाषा यथार्थ को प्रस्तुत ही नहीं करती उसके छद्म का भी उद्घाटन करती है अमानवीय शक्तियों के दबाव के विरुद्ध अपने ढंग से कारगर होती है। इस संबंध में लीलाधर जगूड़ी का यह कथन ध्यान देने योग्य है — "समकालीन कवियों की कविता ने केवल भाषा की शक्ति को ही नया नहीं बनाया, बल्कि स्थिति का विश्लेषण भी किया है। यहाँ शब्द बुलेट का काम करते हैं। आम आदमी तक पहुँचने वाला मुहावरा युवा कविता ने रचा। बल्कि यों कहें कि आज की कविता आम आदमी की कविता है।" — 'आवेग', पृ. 13.

भाषिक प्रक्रिया और काव्य-प्रक्रिया की प्रश्नकुलता भी लीलाधर जगूड़ी की कविता में दिखाई देती है —

फौजी दस्ते की तरह अंधेरे में
एक भाषा खाइयाँ बदल रही है
और शब्दों को गोलियों की जगह
भर रही हैं

चीजों की व्यवस्था में
तुम्हारा इस तरह गायब हो जाना
मेरे लिखने की भाषा है
अब निरंतर अपने भीतर सुन रहा हूँ खुर-खुर
भाषा को जो आघात पहुँच रहा है
मेरी मरम्मत के बहाने।

काव्य-भाषा के आभिजात्य से मुक्ति का एक जोरदार अभियान धूमिल ने चलाया। उन्होंने पैनी, कटखनी, व्यंग्य प्रधान और सीधी मार करने वाली भाषा में कविता लिखी। "कविता" और "भाषा" शब्दों का इस्तेमाल उनकी कविता में बार-बार हुआ है। इससे उनकी रचनात्मक जिम्मेदारी की सजगता प्रकट होती है। उनकी शब्दावली पर गौर करें तो सचमुच वह कहीं एकालाप लगती है, कहीं वार्तालाप, कहीं हलफनामा और कहीं वक्तव्य — एक जागरूक कवि का समकालीन जिंदगी पर दिया गया सार्थक वक्तव्य।

समकालीन कविता की काव्य-भाषा में गुस्सा, नफरत, घृणा, आक्रोश, अन्याय की पीड़ा, विकृत राजनीति से विद्रोह की अर्थअच्छायाएँ साफ-साफ उभरी हैं। कलावाद-रूपवाद की काव्य-भाषा से हटकर समकालीन कविता ने भाषा को जनता तक पहुँचाने के लिए भरसक प्रयास किया है। इसलिए वहाँ काव्य-भाषा में स्थानीय रंग की शब्दावली का बहुतायत प्रयोग हुआ है। "चमरौधा", "डबरे", "चूल्हे का कोयला", "चौका", "पाला लगी मटर", "सोहर", "कठवत" जैसे शब्द कवि की देशी संवेदना के सहज रूप में आते हैं। भाषा में लोक-रंगों की चमक पैदा होती है।

शब्द वाक्य और विराम चिह्नों के स्तर पर भी इस कविता में कहीं-कहीं तोड़-मरोड़ की प्रवृत्ति दिखाई देती हैं जैसे —

1) इतनी उजली
इतनी बलाकाएँ
बोलती इतनी कराकुलें ना
चते इतने मयूर आ
समानों तक
उठी हरी पर दूब
पर
धुनी इतनी रुई
तने नये परवने

—श्रीराम वर्मा

2) देश एक लंगड़ाता हुआ वृद्ध मरीज····
देश प्रेम एक अय्याशी का
दिया हुआ महामंत्र। दुखती है कोई कनपटी की नस और
बाजुओं में रक्तपात की इच्छा पनपने लगती है — एक पाखंड

— जगदीश चतुर्वेदी
(एक लंगड़ा आदमी का बयान)

समकालीन कविता ने लोक जीवन के मुहावरे और लोकोक्तियों का समर्थ अनुभव संसार गढ़ने का समर्थ प्रयास किया है। व्यंग्य में गँवई संवेदना का लट्ठमारपन भी वहाँ मौजूद है। "भाषा में भदेस" के प्रयोग के कारण पारंपरिक सौन्दर्य बोध को भी फटकारा गया है। साथ ही यह कविता भद्दे और विद्रूप शब्दों से एक अर्थवान संसार को निर्मित करती है। भूख की पीड़ा व्यंग्यों और प्रतीकों में मरोड़ के साथ प्रस्तुत होती है —

चूल्हे की राख से
सपने सब शेष हुए।
बच्चों की सिसकियाँ
गीतों पर चढ़ती
छिपकलियों सी बिछल गईं

— श्रीकांत वर्मा
"भटका **its**", पृ. *6*

अकविता के कवियों की भाषा में उत्तेजना प्रधान उद्विग्न स्वर मिलता है, चौंकाने वाले शब्द प्रयोग और अति कथनों में कहीं-कहीं अतार्किक विस्तार और बड़बोलापन भी है, जिससे भाषा अनुभव की ओर ले जाने की बजाए सही फिकरेबाजी की ओर ले जाती प्रतीत होती है।

33.6.3 बिंब, प्रतीक और मिथक

नयी कविता में चमकते-खनकते बिंबों, प्रतीकों का प्रयोग काव्य-विलास की सामग्री बन गया था। एक दो नए बिंबों के प्रयोग मात्र को ही कविता कहा जाने लगा था। इस चमत्कारी बिंब प्रतीक की प्रवृत्ति को समकालीन कविता ने

झटके से तोड़ा। उसने सपाटबयानी की शक्ति का वर्णन किया और इनके भीतर से कविता निचोड़ी। यह नहीं कि वहाँ प्रतीक हैं ही नहीं लेकिन वे चौंकाने के लिए नहीं आम आदमी की पीड़ा और संत्रास को कविता उन रोजमर्रा के प्रतीकों से कहती है जो अपनी सुपरिचितता के कारण बेहद सम्प्रेषणीय हैं — जैसे केदारनाथ सिंह की "बैल" शीर्षक कविता में बैल उस मजबूर आदमी का प्रतीक हो जाता है जो दूसरों की इच्छा से संचालित होने के लिए विवश है —

वह चल रहा है और सिर्फ एक पगडंडी
उसे याद है जो उसकी पूँछ की तरह
उसे हाँके लिए जा रही है।
× × ×

वह ऐसा जानवर है जो दिन भर
भूसे के बारे में सोचता है
रात भर ईश्वर के बारे में

समकालीन कविता में कुछ शब्द अक्सर प्रतीक रूप में उभर कर आए हैं। यद्यपि इनका प्रतीकार्थ अलग-अलग कवियों ने अलग-अलग ढंग से लिया है, जैसे — जंगल, शब्द सर्वेश्वर में समाज और इतिहास चेतना का प्रतीक है तो धूमिल की कविता यह अक्सर अव्यवस्था का प्रतीक होकर आया है जो भारतीय जनतंत्र की अराजकता का अर्थ देने लगता है। 'जंगल' के साथ ही दलदल, भेड़िये तथा अन्य बनैले पशुओं का जिक्र भी है। लीलाधर जगूड़ी की कविता में भी 'जंगल' अक्सर आता है। कभी-कभी अर्थ की नई चमक भी उसमें कौंधती है किन्तु लगातार पुनरावृत्ति और सदैव उसमें नया अर्थ भरने की चेष्टा इस समर्थ प्रतीक को अर्थहीनता के अंधकार में ले जाती है।

ऐतिहासिक-पौराणिक मिथकों का समसामयिक कविता में बखूबी प्रयोग हुआ है। इतिहास के पात्र भी मिथक के रूप में आए हैं। मिथकों के इस प्रयोग से जातीय अस्मिता और वर्तमान स्थितियों के बीच संवाद स्थापित किया गया है। श्रीकांत वर्मा की "जलसाघर" नामक कविता में इतिहास प्रसिद्ध बर्बर विजेताओं के नाम लगातार कौंधते हैं। हत्या, लूटपाट और बलात्कार से भरे पूरे संग्रह में व्यापक युद्धोन्माद के बीच —

केवल अशोक लौट रहा है
और सब
कलिंग का पता पूछ रहे हैं
केवल अशोक सिर झुकाए है
और सब विजेता की तरह चल रहे हैं।

राजकमल चौधरी की कविता मुक्ति प्रसंग में "उग्रतारा" के पौराणिक मिथक के माध्यम से आधुनिक मनुष्य के मन की स्वाधीनता की घोषणा और संस्कारों की जकड़न की उलझन को व्यक्त करती है —

अब तुम मेरी पूजा करो उग्रतारा में सोया हुआ वर्तमान हूँ, शिव हूँ
तुम्हारा संपूर्ण आत्म निवेदन
स्वीकारने का एकमात्र मुझको रह गया है अधिकार

समकालीन कविता के बिंबों अथवा शब्द चित्रों में भदेस की अनगढ़ता भी है और बिल्कुल मामूली रोजमर्रा की जिन्दगी की निकटता भी। कहीं असंबद्ध बिंब प्रतीकों का अतिशय विस्तार केवल जटिलता और बड़बोलेपन से आगे नहीं बढ़ पाता। असंबद्ध शब्दों के संशोधन में कवि कितनी ही चतुराई बरते वह भाषा के अवमूल्यन से आगे नहीं बढ़ पाता। यद्धपि भाषा के सामाजिक-राजनीतिक संस्कारगत अवमूल्यन के प्रति कवि काफी सचेत भी है।

33.6.4 नवीन काव्य लय

समकालीन कविता ने छंद को हर तरह से छीलकर गद्य लय में ढाल दिया है। आज कविता बोलचाल के वैचारिक गद्य और कविता के पार्थक्य को समाप्त कर रही है। नीचे एक उदाहरण दिया गया है —

"इससे अधिक हम कुछ नहीं बता सकते महाराज! हमारे बिके
हाथों में जो ऐंठन होती है उसे जाना ही जा सकता है।
द्वारपाल के लिए बनी बुर्जियों से कूदकर जब हम गिरफ्तार
करने के लिए उनके हाथ थमते हैं तभी वह होता है हाँ
महाराज! तभी उसके काले हाथों पर जगह-जगह अंधेरे के
गाढ़े चकत्ते होते हैं। ····

(पता — ज्ञानेन्द्र पति)

समकालीन कविता की अनेक कविताएँ गद्य की लय का विस्तार कवि मानते हैं कि कविता अब वक्तव्य है और तुक-तान की संगीत लहरी से मुक्त है। जब जीवन में संगीत नहीं तो कविता में कहाँ से आए। इसलिए समकालीन कविता अपने शिल्प की टेकनीक से जीवन वास्तविकता को रचती है। उसका नया काव्यात्मक मुहावरा गद्य-पद्य के कृत्रिम बंधन की पहचान मिटाकर सर्जनात्मकता में सक्रिय है। तर्क और बौद्धिकता, विज्ञान और प्रौद्योगिकी की भाषा के प्रभाव-दबाव से वह जीवन का यथार्थ उद्घाटित कर रही है।

33.7 मूल्यांकन

समकालीन कविता की संवेदना में जीवन जगत का कोई क्षेत्र वर्जित नहीं है। इस तरह वह पूरा खुलापन अपनाती हुई राजनीतिक तथा आर्थिक क्षेत्रों की विद्रूपताओं-विकृतियों को व्यंग्य और सपाटबयानी दोनों से ही अभिव्यक्त करती है। अपने समग्र प्रभाव में समकालीन कविता परिवेश की विकृतियों की तीव्र प्रतिक्रिया है। खोखले मूल्यों के प्रति उसमें निषेध का भाव है। पर मामूली आदमी की शक्ति एवं संगठन में उसकी अटूट आस्था है। उसमें अस्तित्ववाद, क्षणवाद, कुंठावाद, भोगवाद, व्यक्तिवाद के लिए जगह नहीं है। मार्क्सवादी-समाजवादी विचारों के प्रगतिशील पक्ष की वह समर्थक है। किन्तु कथ्य तथा रूप विधान में वह विदेशी नारों और आंदोलनों की नकल नहीं है। उसमें अपनी जमीन और देश पूरी परिस्थिति के साथ मौजूद है। यह हमारी जमीन की जड़ों से फूटी कविता है, जिसमें जन-जन के कंठ की व्यथा-कथा, आशा-निराशा को वाणी मिली है। मानव की स्वतंत्रता को यह कविता बुनियादी मूल्य के रूप में अपनाती है और यही इसकी सार्थकता है।

बोध प्रश्न 3

i) 'समकालीन कविता की शिल्पगत प्रणालियों में सहजता की ओर झुकाव है — चमत्कार की ओर नहीं।' इस कथन पर प्रकाश पाँच पंक्तियों में डालिए।

.....

.....

.....

.....

.....

ii) समकालीन काव्य-भाषा की किन्ही दो विशेषताओं का संकेत कीजिए।

.....

.....

iii) समकालीन कविता के दो प्रमुख प्रबन्ध काव्यों और उनके कवियों के नाम लिखिए।

.....

.....

iv) समकालीन कविता की बिंब और प्रतीक चेतना पर तीन पंक्तियों में विचार कीजिए।

.....

.....

.....

बोध प्रश्न 4

i) निम्नलिखित में से कौन-सा समकालीन कविता के पर्याय के रूप में प्रयुक्त होता है —

1) नयी कविता
2) साठोत्तरी कविता
3) प्रयोगवादी कविता

ii) समकालीन कविता में निम्नलिखित में से क्या नहीं है?

1) परिवेश के प्रति सजगता
2) विषमता और विद्रूपता का चित्रण
3) शृंगारिक परिवेश

iii) निम्नलिखित में से किसे समकालीन कविता का कवि नहीं कहा जा सकता?

1) धूमिल
2) मलयज

3) केदारनाथ सिंह

4) महादेवी वर्मा

iv) निम्नलिखित रचनाओं के लेखक कौन हैं?

1) संसद से सड़क तक

2) इतिहासहंता

3) जलसागर

4) मुक्ति प्रसंग

v) निम्नलिखित कवि समकालीन कविता की किस धारा से जुड़े हैं?

1) रमानाथ अवस्थी

2) सौमित्र मोहन

3) रघुवीर सहाय

33.8 शब्दावली

सांप्रतिक कविता : आज की कविता।

लघुमानव : अमरीकी अस्तित्ववादी दर्शन का सिद्धांत है। नयी कविता में लघुमानव सिद्धांत का प्रचार कवितावादी, सौंदर्यवादी और अनास्थावादी मूल्यों के प्रचार करते रहे हैं। मुक्तिबोध इस सिद्धांत की निंदा करते हैं।

तात्कालिकता : रचना में तात्कालिकता आमने-सामने घटित होने वाले दृश्यों को चमकीले प्रतीकों में बांध कर व्यक्त करती है।

सशस्त्र राजनीति : अधिकार के लिए हिंसा का समर्थन करने वाली राजनीति।

अवमानवीकरण : मनुष्य को उसकी प्रकृत स्थितियों से नीचे गिरा कर उसका अवमूल्यन कर देना। मानवीय गरिमा का सम्मान न करना।

कुलकवाद : खानदानवाद।

क्षणवाद : अस्तित्ववादी दर्शन का पारिभाषिक शब्द यह दर्शन निरंतरता में विश्वास नहीं रखता इसलिए यह इतिहास बोध के विपरीत होता है।

कुंठावाद : मनोविश्लेषण शास्त्र का पारिभाषिक शब्द। अभावों से कुंठा का जन्म होता है। कुंठाएँ मनुष्य के व्यक्तित्व के स्वस्थ विकास को रोकती है।

33.9 कुछ उपयोगी पुस्तकें

डॉ. परमानन्द श्रीवास्तव, *समकालीन कविता का यथार्थ*, हरियाणा साहित्य अकादेमी, चंडीगढ़।

डॉ. रघुवंश, *समसामयिकता और आधुनिक हिंदी कविता*, केन्द्रीय हिंदी संस्थान, आगरा।

डॉ. परमानन्द श्रीवास्तव, *समकालीन कविता का व्याकरण*, शुभदा प्रकाशन, नवीन शाहदरा, दिल्ली-32।

डॉ. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, *समकालीन हिंदी कविता*, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली।

डॉ. सुखवीर सिंह, *कविता का वैचारिक वर्तमान*, जयश्री प्रकाशन, दिल्ली-32।

33.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

i) देखिए उप-भाग 33.2.2 तथा 33.2.4

ii) देखिए उप-भाग 33.2.4

iii) I) x 2) × 3) √

iv) समकालीन कविता के संवेदात्मक तत्वों में तात्कालिकता और आधुनिकता की विशेष भूमिका है। इन दोनों तत्वों ने मिलकर समकालीन कविता को नयी संवेदात्मक दिशा दी है।

v) समकालीनता से तात्पर्य है सन् 1960 के बाद विकसित होने वाली कविता। सन् 1960 के बाद की हिंदी कविता में अनुभवों को अभिव्यक्ति में ढाला गया। फलतः कविता जीवन अनुभवों के यथार्थ से उपजी कविता है। इसे हम कल्पित कविता का नाम नहीं दे सकते।

vi) क) देखिए उप-भाग 33.2.2
ख) देखिए उप-भाग 33.2.3
ग) देखिए उप-भाग 33.2.4

बोध प्रश्न 2

1 देखिए भाग 33.4

2 देखिए भाग 33.5

3 देखिए उप-भाग 33.5.1

4 1) कुआनो नदी 2) शब्दों के तल्प पर 3) पटकथा

5 देखिए उप-भाग 33.5.3

6 देखिए उप-भाग 33.5.5

7 क) × ख) √ ग) ×

8 1) अकविता 2) विचार-कविता 3) युयुत्सावादी कविता 4) जन कविता

बोध प्रश्न 3

i) समकालीन कविता जीवन की वैचारिक स्थितियों को बोलचाल की संप्रेषणीय भाषा में प्रस्तुत करती है। इसकी लंबी कविताओं में भी गद्य की ओर झुकाव वैचारिकता के कारण ही है। इन कवियों के बिंब और प्रतीक ऐसे हैं जिनमें जटिलता नहीं हैं। प्रायः वे अनुभव से उभरे बिंब और प्रतीक हैं। गीत, नवगीत और मुक्तछंद परक खुली कविताओं में अपने आसपास के अनुभव को कवियों ने स्वाभाविकता से प्रस्तुत कर दिया है। इसलिए इन कवियों को चमत्कार प्रदर्शन करने वाले कलावादी कवि नहीं कहा जा सकता है।

ii) देखिए उप-भाग 33.6.2

iii) क) कालजयी — भवानी प्रसाद मिश्र
ख) महाप्रस्थान — नरेश मेहता

iv) देखिए उप-भाग 33.6.3

बोध प्रश्न 4

i) 1) × 2) √ 3) ×

ii) 1) x 2) × 3) √

iii) 1) √ 2) √ 3) √ 4) ×

iv) 1) धूमिल 2) जगदीश चतुर्वेदी 3) श्रीकांत वर्मा 4) राजकमल चौधरी

v) 1) नवगीत 2) अकविता 3) प्रगतिशील यथार्थ की धारा